❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर।।

सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर। O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotces.

वर्ष 40, अंक 27 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 मई, 2017 से रविवार 7 मई, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पाश्चात्य विद्वानों का वैदिक अध्ययन एवं लेखन

– डॉ. भवानी लाल भारतीय

......भारत के उन विद्वानों पर भी यूरोपीय वेदज्ञों का प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में दिखाई दिया। उदाहरण के लिए बालगंगाधर तिलक ने ध्रुव प्रदेश को आर्यों की आदित्य जन्मभूमि बताने का श्रम ज्योतिष् का मनमाना सहारा लेकर किया जो वैदिक विद्वत् समाज में कदापि स्वीकार नहीं हुआ। अविनाशचन्द्र दास नाम के एक बंगाली वेदज्ञ ने तिलक के मत का खण्डन किया तथा मन्त्रों के प्रमाण देकर बताया कि पंजाब का सप्तसिन्धु प्रदेश ही आर्यों का प्रथम निवास था और ऋषियों ने मन्त्रों की रचना या दर्शन इसी प्रदेश में किया था। पर दक्षिणात्य वेदज्ञ ही परमशिव अय्यर ने ऋग्वेद का अध्ययन भूगर्भ विद्या के आधार पर किया।.......

संसार की सर्वाधिक प्राचीन भाषा संस्कृत के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों से पश्चिमी संसार का परिचय काफी पहले हो गया था। मध्य एशिया में एक स्थान पर जब खनन हुआ तो ईटों पर अंकित एक आलेख मिला। इसमें दो राजाओं की परस्पर सन्धि का मसौदा अंकित था। इसमें सन्धिकर्ता दोनों पक्षों ने वैदिक देवता-मित्र और और वरुण को इस सन्धि का साक्षी माना था। यह घटना ईसा पूर्व की बताई जाती है। कालान्तर में जब संस्कृत में हितोपदेश तथा पञ्चतन्त्र जैसी पशु-पक्षियों पर आधारित नीति-कथाएं लिखी गई तो उनका अनुवाद विभिन्न यूरोपीय भाषाओं में हुआ। इसी प्रकार बादशाह शाहजहां के बड़े बेटे दाराशिकोह द्वारा किये गये उपनिषदों के फारसी अनुवाद को यूरोप में सर्वत्र प्रशंसा मिली। जर्मन दार्शनिक शापनहार ने तो आर्यों की आध्यात्मविद्या के इस सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ को पढ़कर कहा था कि इन उपनिषदों से ही उसे इस जन्म में तो शान्ति मिली ही है, उसका विश्वास है कि आगामी जन्म में भी यही ब्रह्मविद्या उसकी आत्मा को शान्ति एवं तृप्ति देगी। यह उपनिषदों के प्रति एक बड़ी श्रद्धाञ्जलि थी।

संस्कृत तथा अन्य भारतीय शास्त्र ग्रन्थों का अध्ययन पश्चिमी देशों में अठारहवीं शताब्दी के समाप्त होने लगा था। ईस्ट इंडिया कम्पनी के द्वारा स्थापित सुप्रीम कोर्ट के एक न्यायाधीश पर विलियम जोन्स ने एशियारिक सोसाइटी की स्थापना कर भारतीय विद्याओं तथा संस्कृत ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार का आरम्भ किया था। उन्होंने स्वयं मनुस्मृति, भगवद्गीता तथा कालिदास के नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् का अंग्रेजी में अनुवाद किया। यही वह समय था जब वेदों से पाश्चात्य विद्वानों का परिचय हुआ और उन्होंने संसार के इन सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थों के अध्यापन एवं अनुशीलन में मनोनिवेश किया जो करोड़ों भारतवासी आर्यों द्वारा ईश्वरीय अपौरुषेय ज्ञान के भण्डार माने जाते थे।

प्रो. एच.एच. बिल्सन के अनुसार ऋग्वेद के प्रथम अष्टक का अंग्रेजी अनुवाद एक पादरी स्टीवेंसन ने किया था। सम्पूर्ण ऋग्वेद का लैटिन भाषा में अनुवाद डॉ. लेंग्लोइस ने किया जो पैरिस से छपा था। 1850 में स्वयं बिल्सन ने ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद किया। लगभग इसी समय जर्मन मूल के विद्वान् फ्रैड्रिक मैक्समूलर ने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में रहते हुए ऋग्वेद के सायण भाष्य का सम्पादन एवं अनुवाद करना आरम्भ किया जो बाद में सेक्रेड बुक्स आफ दि ईस्ट सीरीज में छपा। यद्यपि मैक्समूर का प्राच्य ग्रन्थों का अध्ययन ईसाई दृष्टिकोण से किया गया था तथा वह इसके द्वारा यह बताना चाहता था कि आर्यों का धार्मिक साहित्य और तत्त्वज्ञान ईसाइयत की तुलना में हेय तथा नगण्य है तथापि यत्र तत्र उसने वेदों तथा परवर्ती आर्य शास्त्रों की श्लाघा भी की है। वह वेदों के बारे मे लिखता है-''वेदों से अधिक जटिल ग्रन्थ अन्य कौन से हैं और यह भी कहा जा सकता है कि इनसे अधिक रोचक ग्रन्थ भी अन्य नहीं हैं क्योंकि ये ही वे ग्रन्थ हैं जो आदिम युग के आर्यों की वाणी से निकले थे। इन्हीं ग्रन्थों से विश्व के इतिहास के साथ ही भारत के इतिहास का ज्ञान होता है। जब तक मनुष्य अपनी मानव जाति के इतिहास में रुचि लेता रहेगा ओर जब तक हम अपने पुस्तकालयों तथा संग्रहालयों में प्राचीन युग के प्राप्त अवशेषों को एकत्रित करते रहेंगे तब तक संसार के प्राचीनतम ग्रन्थों की पंक्ति में प्रथम स्थान ऋग्वेद को प्राप्त होगा।

कालान्तर में ग्रासमैन तथा लुडविग ने वेदों का अनुवाद किया और थ्योडोर आफ्रैट ने ऋग्वेद का रोमन लिपि में संस्करण प्रस्तुत किया जिसमें स्वर चिह्न लगे हुए थे। हेर्मन ऑल्डेनबर्ग ने मैक्समूलर के सहयोग से वैदिक मन्त्रों का दूसरा भाग सेक्रेड बुक्स ऑफ दि ईस्ट सीरीज में निकाला। इसमें 130 सूक्तों को एकत्र किया गया था। काशी के गवर्नमेंट संस्कृत कालेज के प्राचार्य राल्फी.एच. ग्रिफिथ ने मई 1889 में ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद तैयार किया। आगे चलकर उन्होंने चारों वेदों का अंग्रेजी पद्यानुवाद किया। यूरोप के कुछ विद्वानों की वेदविषयक धारणाओं का यदि संकलन किया जाये तो ज्ञात होता है कि प्रो. विल्सन की दृष्टि में ऋग्वेद के अधिकांश मन्त्र आर्यों के सामाजिक एवं

– शेष पृष्ठ 4 पर

आर्य पुरुषों के अल्पज्ञात संस्मरण

जालंधर कन्या महाविद्यालय और लाला देवराज जी

– डॉ. विवेक आर्य

यह बात उस काल की है जब हमारे देश में लड़कियों को पढ़ाना बुरी बात समझा जाता था। स्वामी दयानंद जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में किये गए उद्घोष की नारी का काम जीवन भर केवल चूल्हा चौका करना नहीं अपितु गार्गी के समान प्राचीन विदुषी बनकर अपना कल्याण करना है से प्रेरित होकर जालंधर में आर्यसमाज के नेता लाला देवराज जी की प्रबल इच्छा हुई कि कन्याओं के लिए विद्यालय खोले जायें जिससे उनका सुधार हो सके। उस काल की सामाजिक परिस्थितियों को इसी बात से समझा जा सकता हैं कि लाला जी को अपना विद्यालय तीन बार खोल कर बंद करना पड़ा था क्योंकि कभी लड़कियों के लिए शिक्षिका उपलब्ध नहीं होती थी, अगर होती थी तो वह भी ईसाई शिक्षिका होती थीं जो छात्राओं को ईसाई बनाने में ज्यादा श्रम करती थीं, कभी कोई अपनी लड़की को निःशुल्क होने पर भी पढ़ने को न भेजता था। अगर कोई भेज भी देता तो कुछ समय बाद वापस आकर लाला जी को अपशब्द कहकर अपनी लड़की को वापस ले जाता। ऐसी अवस्था में भी लाला देवराज जी ने हार नहीं मानी और 1886 में अपने तप, दृढ़ता और परिश्रम से जालंधर कन्या विद्यालय आरम्भ हो गया। उत्तर भारत में नारी शिक्षा के प्रचार प्रसार करने में जालंधर कन्या महाविद्यालय का अग्रणी स्थान है।

शिक्षा का वातावरण पूर्ण रूप से राष्ट्रीय था। आरम्भ से अल्प संसाधन होने के कारण गर्मी के महीने में भी टीन की छत के नीचे छात्राओं को पढ़ना पड़ता था जिससे वे कभी-कभी अस्वस्थ भी हो जाती थीं। सरकार की ओर से लाला जी को धन का प्रस्ताव आता था पर वह यह कहकर उसे ठुकरा देते थे कि अंग्रेज सरकार विद्यालय के राष्ट्रीय वातावरण में हस्तक्षेप करने का आसान तरीका खोज रही है।

विद्यालय के राष्ट्रीय वातावरण की एक झलक हम एक-एक वाक्या से प्राप्त कर सकते हैं।

सन् 1903, मई का महीना था। विद्यालय में सुदूर सीमा प्रान्त से एक महिला अपनी पाँच वर्षीय लड़की को पढ़ाने की प्रबल इच्छा से लाला जी के सुपुर्द कर गयी। माता-पिता के जाने से बालिका कुछ उदास सी थी। लाला जी ने उस बालिका को अपनी गोद में बैठाया और कापी-पेंसिल लेकर उसमें गीत लिख कर सभी के साथ गुनगुनाने लगे। उस गीत के बोल कुछ इस प्रकार थे-

देश भक्ति, देश सेवा,
देश रक्षा के लिए
प्राण भी जाये अगर,
तो भी भलाई मानिये।
देश जिसके अन्न-जल को,
भोगती हो रात दिन
कमर बांधों होके चैतन्य,
तारों उसके सारे विघ्न।।

यह गीत लाला जी का ही बनाया हुआ था। ऐसे-ऐसे देशभक्ति के गीतों को हर शनिवार को लाला जी सभी छात्राओं से बुलवाते थे।

पाठक इस कविता के गुण-दोष न

– शेष पृष्ठ 5 पर

वेद-स्वाध्याय

प्रभो! मेरी पुकार सुन

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। -ऋ. 6/47/11
ऋषिः गर्गः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - त्रातारं इन्द्रम्= पालन करने वाले इन्द्र को, **अवितारं इन्द्रम्**= रक्षा करनेवाले इन्द्र को हवे हवे **सुहवम्**= एक-एक संग्राम में सुख से पुकारने योग्य **शूरं इन्द्रम्**=पराक्रमी इन्द्र को और **शक्रं इन्द्रम्**=सर्वशक्तिमान् इन्द्र को **पुरुहूतं इन्द्रम्**=जिसे असंख्यों सत्पुरुषों ने समय-समय पर पुकारा है-उस इन्द्र को मैं भी **ह्वयामि**=पुकारता हूं, बुलाता हूं। **मघवा इन्द्रः**=वह ऐश्वर्यवान् **इन्द्र नः स्वस्ति धातु**=हमारा कल्याण करे

विनय- यह संसार एक रणस्थली है। इसमें प्रत्येक मनुष्य अपनी समझ के अनुसार किसी-न-किसी विजय को पाने में लगा रहता है और उसके लिए दिन-रात संघर्ष में लग जाता है। यद्यपि इन संघर्षो में विजय पाने के लिए मनुष्य प्रायः अपने शरीर-बल, बुद्धि-बल, संगठन-बल, विज्ञान-बल, मित्र-बल, सैन्य-बल आदि बलों का प्रयोग करता हुआ अभिमान से समझता है कि मैं इन बलों द्वारा ये सब लड़ाइयाँ जीत लूँगा, परन्तु एक समय आता है जब मनुष्य इन सब बाह्य-बलों से हारकर, निराश होकर, संसार की किसी अज्ञात शक्ति को ढूंढने व पुकारने लगता है। 'हे राम', या 'अल्लाह' या 'O my God' आदि कहकर किसी-न-किसी नाम से, हे इन्द्र! असल में वह तुझे पुकार उठता है। तब पता लगता है कि, हे संसार की अज्ञात, अदृष्य शक्ते! तू ही एकमात्र शक्ति है। संसार के शेष सब बल तेरे ही आधार से बल हैं। जब तू चाहता है तब वे बल होते हैं, जब तेरी इच्छा नहीं होती तब किसी भी बल में शक्ति नहीं रहती। इसलिए, हे इन्द्र! तू ही मेरा सच्चा पालक है ओर तू ही एकमात्र सब आपत्तियों से मेरा रक्षक है। तुझ ही महापराक्रमी को हर संग्राम में पुकारना चाहिए। तेरा ही पुकारना शोभन है, सुफलदायक है और किसी को पुकारना निष्फल है, बेकार है। पुकारा हुआतू भक्तजनों के संकट एक क्षण में दूर कर देता है। तू सर्वशक्तिमान् है। अतएव तू 'पुरुहूत' है, सदा से जबसे सृष्टि चली है सन्त लोग तुझे आड़े समय में पुकारते रहे हैं, याद करते रहे हैं। हे शक्र! तुझे छोड़कर मनुष्य और किसे पुकारे? इसलिए, हे इन्द्र! मैं भी तेरी पुकार मचा रहा हूं। मघवन्! तू मेरे लिए कल्याणकारी होता हुआ मेरी पुकार सुन। मैं निश्चय से जानता हूं कि मैं तेरा पवित्र नाम लेता हुआ अपने इस जीवन की सब लड़ाइयों में विजय पाता चला जाऊँगा। मुझे किसी युद्ध में किसी भी अन्य हथियार की आवश्यका नहीं। बस, तू मेरी वाणी पर रहे, यही चाहिए। तेरा नाम पुकारना मुझे सब विपत्तियों से पार कर देगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

हम कब तक शहीद गिनते रहंगे?

कभी दंतेवाडा कभी बस्तर, कभी उडी तो कभी सुकमा और अब कुपवाड़ा जवान शहीद होते रहेंगे हम लोग बस शहीद गिनते रहेंगे और राजनेता निंदा के साथ मुंहतोड़ जवाब देने की बात करते रहेंगे। हुर्रियत हो या नक्सलवाद ये विचारधारा दिन पर दिन हावी होती जा रही है। कुछ लोग नक्सलियों को आतंकी नहीं मानते तो कुछ पत्थरबाजों को मासूम कहने से भी परहेज नहीं या फिर भ्रमित विचारधारा के शिकार कहकर इनका बचाव किया जाता है। एक छोटा सा देश श्रीलंका, लिट्टे का नामोनिशान मिटा देता है, यहाँ स्वयं को महाशक्ति समझने वाला भारत नक्सलियों से पचासों साल से जूझ रहा है। हर हमले के बाद राजनेता ट्वीट कर निंदा कर देते हैं। मीडिया एक दिन बहस कराकर अगले दिन मानवता के पाठ के साथ मासूम बताने लगती है।

सुकमा के 26 जवानों की शहादत से देश के किस नौजवान का खून नहीं खोला होगा। किस माँ की आँखे नम नहीं हुई होगी, 26 घरों के चिराग बुझ गये क्या अब भी वे नक्सलियों को सही ठहराएंगे? यदि नहीं तो कब तक हम श्रद्धांजलि देते रहेंगे? आज का नक्सल आंदोलन 1967 वाला आदर्शवादी आंदोलन नहीं रहा है, बल्कि यह साम्यवादियों द्वारा रंगदारी वसूलनेवाले आपराधिक गिरोह में बदल चुका है। इन पथभ्रष्ट लोगों का साम्यवाद और गरीबों से अब कुछ भी लेना-देना नहीं है। हाँ, इनका धंधा गरीबों के गरीब बने रहने पर ही टिका जरूर है इसलिए ये लोग अपने इलाकों में कोई भी सरकारी योजना लागू नहीं होने देते है और यहाँ तक कि स्कूलों में पढ़ाई भी नहीं होने देते। आप ही बताइए कि जो लोग देश के 20 प्रतिशत क्षेत्रफल पर एकछत्र शासन करते हैं वे भला समझाने से क्यों मानने लगे?

हर दिन, हर सप्ताह, हर महीना, हर साल भारतीय जवान मरते रहते हैं, राजनेता आरोप प्रत्यारोप लगाकर इस खून सनी जमीन पर मिट्टी डालते रहते हैं, लगता है वोट के इस बड़े धंधे में जवानों को झोंका जा रहा है। आज हमारी वर्तमान केंद्र सरकार नक्सली समस्या को जितने हल्के में ले रही है। यह समस्या उतनी हल्की है नहीं। यह समस्या हमारी संप्रभुता को खुली चुनौती है, हमारी एकता और अखंडता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। हमेशा से नक्सलवादी इलाकों में सरकार योजना लेकर जाती है। लेकिन लाशें लेकर आती है। भला क्या कोई ऐसी समस्या स्थानीय हो सकती है? क्या यह सच नहीं है कि हमारे संविधान और कानून का शासन छत्तीसगढ़ राज्य के सिर्फ शहरी क्षेत्रों में ही चलता है? क्या यह सच नहीं है कि वहाँ के नक्सली क्षेत्रों में जाने से हमारे सुरक्षा-बल भी डरते हैं तो योजनाएँ क्या जाएंगी?

आज इन सवालों से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि भारत के मध्य हिस्से में नक्सल बाहुल इलाकों में इन लोगों के पास धन और हथियार कहाँ से आता है? कौन लोग इन्हें लाल क्रांति के नाम पर उकसा रहे हैं? यदि सरकार विश्व के सामने अपनी उदार छवि पेश करना चाहती तो उसे सुरक्षित भारत की छवि भी पेश करनी होगी। जम्मू-कश्मीर और मिजोरम के बाद कई राज्य संघर्ष के तीसरे केंद्र के रूप में उभरे हैं जहाँ पर माओवादियों के विरुद्ध सुरक्षा बलों की व्यापक तैनाती हुई है। पिछले लगभग साढ़े चार दशकों से चल रहा माओवाद जैसा कोई भी भूमिगत आंदोलन बिना व्यापक जन समर्थन और राजनेताओं के संभव है? लंबे अरसे से नक्सल अभियान पर नजर रखे सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि बिना तैयारी के सुरक्षा बलों को नक्सल विरोधी अभियान में झोंक देना भूखे भेड़ियों को न्योता देने के बराबर है। नक्सल अक्सर ही गुरिल्ला लड़ाई का तरीका अपनाते हैं और उनपर हमला कर गायब होने जाने की रणनीति सुरक्षा बलों के लिये खासा खतरनाक साबित हुआ है। नक्सली जिन इलाकों में अपना प्रभाव रखते हैं वहाँ पहुंचने के साधन नहीं हैं। पिछले दस सालों से इन इलाकों में न ही सरकार और न ही सुरक्षा एजेंसियों ने प्रवेश करने का जोखिम लिया है। जिस कारण यह लोग मजबूत होते गये। एक समय देश की सड़कों पर जाते समय छायादार वृक्ष दिखाई देते थे आज किसी भी सड़क पर निकल जाओ शहीद सिपाहियों के स्मारक दिखाई देते हैं। जब मौत केवल आंकड़ा बन जाए। जवाब केवल ईट और पत्थर में तोला जाए। जब दर्द, हमदर्द देने लगें.तो सुकमा बार बार होगा। जबकि इस देश का इतिहास देखे तो युद्ध के दौरान कई बार कृष्ण ने अर्जुन से परम्परागत नियमों को तोड़ने के लिए कहा था जिससे धर्म की रक्षा हो सके। कर्ण की हत्या इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, युद्ध के दौरान कर्ण निःशस्त्र थे तब कृष्ण ने अर्जुन से कहा **'हे पार्थ धर्म की जीत के लिए कर्ण का वध जरूरी है।'**

- सम्पादक

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित
नैतिक शिक्षा की पुस्तकें
नर्सरी से 12वीं कक्षा तक
आकर्षक छूट 25%
बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

कश्मीर आगे का रास्ता क्या है?

सवाल थोड़ा अटपटा सा है जिस पर कुछ देर को ही सही पर नेहरु को भी कोसा जाना लाजिमी है लेकिन सवाल फिर वही उभरकर आएगा क्या नेहरु को दोष देकर कश्मीर का हल निकल जायेगा? कश्मीर पर नेहरू की नीतियों को आज बहुत कोसा जाता है, लेकिन कोसने से आगे का रास्ता क्या है? जब आजादी मिली तो कश्मीर में राजा हिन्दू था और प्रजा मुसलमान। हिन्दू राजा हिंदुस्तान में रहने को राजी नहीं था, वह अपने लिए स्वतंत्र राज्य चाहता था। लेकिन वहां की मुस्लिम प्रजा ने जिन्ना के पाकिस्तान के बजाय नेहरु के हिन्दुस्तान में रहने का फैसला किया। क्या उसी फैसले की बुनियाद पर कश्मीर की मुश्किलों का हल नहीं ढूंढा जाना चाहिए? कश्मीर के जिस युवा ने आज कश्मीर के नये जिन्नाओं की बदौलत अलगाववाद को अपना करियर बनाया है। जो आजादी की बात करते हैं। उनको भी अपने दिल में पता है कि राजनैतिक भूगोल के लिहाज से यह कभी संभव नहीं है।

आज हर कोई कहता है कि कश्मीर में पिछले कुछ सालों में हालात बेहद खराब हो गये हैं पर इस खराब हालात का जिम्मेदार कौन है? यहाँ आकर लोग थूक गटक लेते हैं या फिर सेना, सरकार पाकिस्तान का नाम लेकर अपने राजनैतिक कर्त्तव्य से पल्ला झाड़ लेते हैं। हम भी मानते हैं आज हालात 1990 की स्थिति से बहुत अलग हैं। 1990 में जो लोग सीमा पार गए और ट्रेनिंग लेकर वापस आए, उनमें से ज्यादातर सिर्फ इस्लामी समझ के तत्त्व थे। उन्हें कुछ खास समझ नहीं थी, दिमाग में सिर्फ एक बात थी कि कश्मीरी पंडितों को बाहर भगाना है। भारत से जुड़े किसी भी किस्म के प्रतीकों, चिह्नों को घाटी से हटाना है और वहां के समाज को मुस्लिम मान्यताओं के आधार पर एकरूप बनाना है। उनकी यही मंशा थी और वे इसमें काफी हद तक कामयाब भी हुए थे।

लेकिन अभी यह जो नए दौर का कट्टरपंथ है, पत्थरबाजी वाला दौर, यह कई गुना ज्यादा कट्टर चरमपंथी है, जिनके हाथों में पत्थर और मुंह में आजादी है। आज कश्मीर से प्रकाशित अखबार, भारत में बैठे कथित मानवताधिकारवादी इन लोगों के साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं। लेकिन भीषण दमन को झेलने के बाद भी ऐसा कोई नहीं दिख रहा जो कश्मीरी पंडितों के साथ खड़ा हो। वामपंथी पार्टियां जोकि दुनिया भर में अल्पसंख्यकों के साथ खड़े रहने का दावा करती हैं, वे आज तक बिल्कुल उदासीन रहीं हैं, कांग्रेस का भी यही रुख था और देश की सिविल सोसाइटी भी इस सवाल से मुंह मोड़े रहीं। आज फिर हर कोई एक स्वर में कह रहा है कि भारत सरकार को इस मसले पर बात करनी चाहिए। लेकिन बात किससे करें? उनसे, जिनके हाथ में पत्थर और दिमाग में मजहबी आजादी का जुनून है?

हमेशा से जब मामला कश्मीरी पंडितों का आता है उस पर मौन साध लिया जाता है। अभी एक न्यूज वेबसाइट पर कश्मीरी पंडितों का दर्द उन्हीं की जुबानी पढ़ रहा था कि वर्तमान हालात से जूझते पंडित भी अब जनमत संग्रह की बात करने लगे हैं। वह कहते हैं कि साल 2010 में बारामूला शहर से करीब तीन किलोमीटर दूर, झेलम के किनारे एक बेहद खूबसूरत कॉलोनी कश्मीरी पंडितों के लिए बनाई गई थी जिन्हें दोबारा कश्मीर में बसाने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री पैकेज के तहत सरकारी नौकरियां दी गई हैं। झेलम के बिल्कुल नजदीक बसी यह कॉलोनी दूर से तो बेहद खूबसूरत दिखती है, लेकिन इसमें रह चुके या रह रहे लोगों का दर्द जानकर इस भौगोलिक खूबसूरती की कोई अहमियत नहीं रह जाती। इस कॉलोनी में आज बमुश्किल दस कश्मीरी पंडितों के परिवार ही रह रहे हैं। ऐसा नहीं है कि पंडितों को निशाना बनाया जा रहा हो लेकिन यहां जो माहौल अब बन गया है, उसमें पंडितों का रहना नामुमकिन हो गया है।' बच्चों की पढ़ाई से जुड़ी उनकी एक बड़ी समस्या यह भी है कि यहां के लगभग सभी निजी स्कूलों में इस्लाम की पढ़ाई कराई जाती है वह नहीं चाहते कि उनके बच्चे इस्लाम सीखें।

घाटी में बचे-कुचे कश्मीरी पंडित कहने लगे हैं, कश्मीर की समस्या का समाधान अब जनमत संग्रह के अलावा कुछ नहीं हो सकता। जनमत संग्रह हो जाना चाहिए। जब तक ये नहीं होगा कश्मीर जलता रहेगा। अब आर या पार हो जाना चाहिए। और उन्हें लगता है कि अभी भले ही कश्मीर की आजादी की मांग ज्यादा दिखती है लेकिन अगर जनमत संग्रह हुआ और वोट की नौबत आई, तो लोग भारत से अलग होने के नुकसान पर भी विचार करेंगे और अंततः भारत के पक्ष में बहुमत होगा। जबकि यह हर कोई जानता है कि कश्मीर से भारत अपना हक छोड़ दे यह संभव है ही नहीं। 1947 में यह संभव था लेकिन तब भी कबायलियों के हमले से बचने के लिए वहां लोगों ने भारत के साथ आने का फैसला किया। जिस दिन भारत की सेना ने श्रीनगर के हवाईअड्डे पर लैंड किया उसी दिन कश्मीर का भविष्य भारत के साथ जुड़ गया था। अब इस जोड़ को तोड़ना कश्मीर के राजनैतिक भूगोल के महत्त्व के चलते संभव नहीं है। अश्विनी पंडित कहते हैं, 'जिन्होंने कभी कश्मीर देखा नहीं, उसे कभी जाना नहीं, जो हमेशा दिल्ली में बैठकर बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, उन्हीं का खून जनमत संग्रह के नाम से खौलता है। हमने कश्मीर को जलते देखा है और सबसे ज्यादा इसे भोगा है। हम जानते हैं कि ये अब एक ऐसा नासूर बन गया है जिसे अनदेखा करने से काम नहीं चलेगा।''

सब जानते हैं कि कश्मीर सिर्फ भूमि का टुकड़ा नहीं है। वह भारत के लिए राष्ट्रीयता की सबसे बड़ी परख है, लेकिन इस परख को अगर राष्ट्रवाद के उन्माद की प्रयोगशाला बनाया जाएगा तो मुश्किलें और बढ़ेंगी। जम्मू-कश्मीर में राज किसका चलेगा, महबूबा मुख्यमंत्री रहेंगी या राज्यपाल शासन लागू होगा। मुद्दा यह है कि कश्मीर कैसे बचेगा और उसको बचाने के लिए अगर विरोधी विचारधारा के किसी राजनेता की भी सुननी पड़े तो सुनना चाहिए। देश चलाने के लिए हमेशा बाहुबल नहीं दिखाया जाता, कई बार मिन्नत भी करनी पड़ती है। दूसरा एक बात सबको समझ लेनी होगी कि हम सीमा और नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तान से आने वाले आतंकवादियों को रोक सकते हैं लेकिन घाटी में लोगों के दिलो-दिमाग में आने वाले मजहबी उन्माद को कैसे रोकेंगे? यदि हम कुछ देर के लिए मान भी लें कि भारत बहुत बड़ा निर्णय लेकर कश्मीर को आजाद कर भी दे तो कश्मीर जैसा जमीन का छोटा सा टुकड़ा जो कि राजनैतिक भूगोल के लिहाज से इतना अहम है, क्या उसको कोई आजाद रहने देगा? 1947 के अनुभव से हमें लगता है कि अगर भारत वहां से अपनी सेना हटा देता है तो कुछ घंटे के अंदर-अंदर पाकिस्तान या चीन या दोनों वहां मौजूद होंगे तो उनका आजाद रहना संभव नहीं होगा?

- राजीव चौधरी

.....अभी यह जो नए दौर का कट्टरपंथ है, पत्थरबाजी वाला दौर, यह कई गुना ज्यादा कट्टर चरमपंथी है, जिनके हाथों में पत्थर और मुंह में आजादी है। आज कश्मीर से प्रकाशित अखबार, भारत में बैठे कथित मानवताधिकारवादी इन लोगों के साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं। लेकिन भीषण दमन को झेलने के बाद भी ऐसा कोई नहीं दिख रहा जो कश्मीरी पंडितों के साथ खड़ा हो। वामपंथी पार्टियां जोकि दुनिया भर में अल्पसंख्यकों के साथ खड़े रहने का दावा करती हैं, वे आज तक बिल्कुल उदासीन रहीं हैं, कांग्रेस का भी यही रुख था और देश की सिविल सोसाइटी भी इस सवाल से मुंह मोड़े रहीं। आज फिर हर कोई एक स्वर में कह रहा है कि भारत सरकार को इस मसले पर बात करनी चाहिए। लेकिन बात किससे करें? उनसे, जिनके हाथ में पत्थर और दिमाग में मजहबी आजादी का जुनून है?.....

बोध कथा

आत्मा ही ब्रह्म को जान सकती है

केन उपनिषद् में एक बड़ी सुन्दर कथा ब्रह्म को पाने के विषय में आती है। ब्रह्म ने अग्नि, वायु, आत्मा इत्यादि देवताओं का मान बढ़ाने के लिए उन्हें विजय प्राप्त करा दी। इस विजय को पाकर ये देवता अभिमान में आ गये कि संसार में सब शक्ति उन्हीं की है।

यह जानकर ब्रह्म प्रकट हुआ और यक्ष के रूप में सामने आया। देवताओं ने कहा- ''यह कौन है?'' तब अग्नि आगे बढ़ी। यक्ष ने पूछा-''तू कौन है और तेरी शक्ति क्या है?''

अग्नि ने कहा-''मैं जातवेदा अग्नि हूं और पृथवी पर जो कुछ है, सबको जला सकती हूं।''

यक्ष ने एक तिनका फेंककर कहा-''इसे जलाओ!''

अग्नि पूरे बल के साथ आगे बढ़ी, किन्तु तिनके को न जला सकी। असफल हो अग्नि लौट आई और कहा-''मैं नहीं जान सकी, यह यक्ष कौन है।''

तब वायु को कहा गया-''तुम पहचानो, यह कौन है?''

वायु दौड़ा गया और यक्ष से कहने लगा-''मै। वायु हूं और सब-कुछ उड़ा सकता हूं।''

यक्ष ने उसके सामने तिनका रखकर कहा-''इसे उड़ाओ!''

वायु ने अपनी पूरी शक्ति लगाई, किन्तु वह उसे उड़ा न सका। वायु ने लौटकर कहा-''मैं इस यक्ष को जान नहीं सका।''

तब इन्द्र (आत्मा) को आज्ञा हुई कि तुम जाओ और पता लगाओ कि यह यक्ष कौन है?

इन्द्र आगे बढ़ा तो क्या देखता है कि वह यक्ष लोप हो गया है। अभी वह आश्चर्य में खड़ा था कि आकाश में बहुत शोभा-युक्त सुनहरी आभूषण से अलंकृत उमा नाम की एक स्त्री उसके सामने आई। इन्द्र ने उससे पूछा-''यह यक्ष कौन है?''

उमादेवी बोली-'' यह ब्रह्म है और इसी की महिमा से तुम देवता महिमावाले हो।''

इस कथा में ब्रह्म की पहचान एक स्त्री ने कराई है और बात है भी सत्य। शिव का पता सिवाय उमा के और कौन दे सकता है? इस कथा में यह बताया गया है कि जड़ देवता, अग्नि, वायु या मनुष्य की इन्द्रियाँ ब्रह्म को सर्वथा नहीं जान सकतीं, उसे केवल इन्द्र अर्थात् आत्मा ही जान सकता है और वह भी उमादेवी अर्थात् बुद्धि की सहायता से।

- साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

पाश्चात्य विद्वानों का वैदिक अध्ययन एवं लेखन

धार्मिक विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। प्रो. कॉवेल की सम्मति में ऋग्वेद की कविता सर्वत्र उच्च कोटि की नहीं है। तथापि जिन मन्त्रों में प्रात:कालीन ऊषा देवता का स्तवन किया गया है वहां श्रेष्ठ काव्य के तत्त्व मिलते है।। प्रो. ग्रिफिथ ऋग्वेद के मन्त्रों में बेशुमार पनुरुक्तियों से उत्पन्नता नीरसता पाते हैं। उनके मत में यह नीरसता नवें मण्डल में अपने चरम पर पहुंच गई है जहां लगभग सारे मन्त्र पवमान सोम को सम्बोधित हैं। ग्रिफिथ वेदों का महत्त्व उसमें ऐतिहासिक तथ्यों की उपस्थिति के कारण मानता है न कि उसके काव्य तत्त्व के कारण। जब वह वैदिक भाषा की तुलना ग्रीक तथा लैटिन से करता है तथा वैदिक देवमाला को यूनानी देवताओं के सन्दर्भ में देखता है तो उसे ईसा पूर्व के यूरोपीय धर्मो में ऋग्वेदीय धर्म और विश्वासों की असाधारण समानता दिखाई देती है। उसने स्वीकार किया कि बिना संस्कृत का अध्ययन किये तुलनात्मक भाषा विज्ञान का विकास सम्भव ही नहीं था। इसी प्रकार वेदों का अध्ययन किये बिना विभिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन भी सम्भव नहीं है।

प्रो. रॉथ ने वैदिक व्याख्या में सायण के मार्गदर्शन एवं सहायता की अनिवार्यता एवं अपरिहार्यता मानने वाले प्रो. विल्सन के इस मत को स्वीकार नहीं किया कि सायण का किया वेदार्थ तथा उसका वेद विषयक ज्ञान यूरोपीय विद्वानों से कहीं बढ़ा-चढ़ा था। इसके विपरीत वह कहता है कि वेद का एक कामशील पाश्चात्य विद्वानवेद के अर्थ को सायण की तुलना में अधिक ठीक समझता है तथापि वह यह मानता है कि वेदों की समग्र तथा सर्वङ्गीण व्याख्या के लिए भाषा विज्ञान की मान्यताओं को स्वीकार किया, कारण कि इन ग्रन्थों को ठीक-ठीक समझना कठिन तथा परिश्रम साध्य कार्य है।

प्रो. मैक्समूलर ने वेदार्थ करने में ब्राह्मण ग्रन्थों तथा निरुक्त की सहायता को अमान्य किया। उसके अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों में धार्मिक अन्धविश्वासों की प्रचुरता है। निरुक्त जैसे वेदार्थ में सहायक प्रामाणिक ग्रन्थ की उपेक्षा कर उसने यास्कीय निरुक्तियों को काल्पनिक कहा जबकि निरुक्त की वेदार्थ पद्धति सर्वथा प्रामाणिक तथा विश्वसनीय है। उसने तो सायण पर भी यह आरोप लगाया है कि वह ब्राह्मण ग्रन्थों तथा निरुक्त के उपयोग के कारण स्वतन्त्र रूप से वेदार्थ नहीं कर सका।

उपर्युक्त यूरोपीय वेद व्याख्याकारों ने चाहे स्वतंत्र रूप से वेदार्थ करने का दम्भ पाला हो, प्रो. गोल्डस्दुकर ने उन्हें सावधान किया कि बिना ब्राह्मण ग्रन्थों और निरुक्त की सहायता लिये वे हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थ वेदरूपी भवन में प्रवेश नहीं कर पायेंगे। वस्तुत: उन्होंने यूरोप के इन विद्वानों के इस दम का उपहास किया कि वे सायण से वेद को अधिक समझते हैं अथवा वेदों की ऋषि कृत व्याख्याओं की अपेक्षा उन्होंने वेदार्थ को सही समझा है। अब हम यह देखें कि पाश्चात्य वेदज्ञों ने किन सिद्धान्तों या विद्याओं के सहारे वेदार्थ किया। ये विद्याएं हैं- तुलनात्मक भाषा विज्ञान तथा तुलनात्मक देवगाथावाद (Comparative my thology and comparative philology) नृतत्त्व विज्ञान तथा विकासवाद। उन्होंने वेदों के बारे में जो निष्कर्ष निकाले वे निम्न थे-

1. वेद प्रारम्भिक युग के जंगली तथा आदिम मनुष्यों के प्रार्थना गीत हैं। इनमें व्यक्त नैतिक और धार्मिक विचार अपरिपक्व तथा अनपढ़ हैं।

2. सायण ने वेदों के आधार पर जिस कर्मकाण्ड का ताना बाना बुना वह आदिम जंगली लोगों द्वारा दी जाने वाली बलियों का ही रूप था। यह बलि काल्पनिक मनुष्येतर शक्तियों के लिए दी जाती थी तो अपने अनुयायियों के प्रति कृपाभाव या क्रोध का भाव रखते थे। अत: सायण कृत वेदार्थ से वेदों के गौरव की हानि ही हुई है।

3. पाश्चात्यों ने यह निष्कर्ष भी निकाला कि वेदों में वर्णित देवतागण प्राकृतिक शक्तियों और भौतिक पदार्थो के प्रतीक हैं। अधिकांश मन्त्र इन्हीं प्राकृतिक शक्तियों (इन्द्र, अग्नि, मित्र, वरुण, पूषा आदि) की महिमा का गान करते हैं।

4. जिन मन्त्रों में देवताओं का स्तुति गान नहीं है वे तत्कालीन इतिहास के प्रसंग बताए हैं अथवा यज्ञों के कर्मकाण्ड को बताते हैं जिसमें कोई रहस्यात्मकता नहीं है। वह आदिम तथा अन्धविश्वास युक्त ही है। वेद के आधार पर इतिहास की गाथाएं रची गई।

अपने इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने आर्य जाति के सम्बन्ध में कुछ मनमाने निष्कर्ष निकाले जो निम्न हैं-

1. प्रथम तो उन्होंने आर्यो के भारत में आक्रमणकारी बनकर आने का काल्पनिक सिद्धान्त ढूंढ निकाला यद्यपि इसके लिए फिर वे कोई ठोस प्रमाण नहीं दे सके।

2. उन्होंने भारत के निवासी (आक्रमणकारी विदेशों से आये) आर्यो तथा यहां के तथाकथित आदिवासी मूल निवासियों (जिन्हें, अनार्य, असुर, दास, शूद्र तथा द्रविड़ कहा जाता है) को दो पृथक् खेमों में रखा। यह जातिगत तथा नस्लगत काल्पनिक भेद कालान्तर में उत्तर भारत और दक्षिण भारत के निवासियों में विग्रह तथा वैमत्य फैलाने का कारण बना। सत्य तो यह है कि वेदों में आर्य और अनार्य (सदाचारी, सतपुरुष ओर कदाचारी, आसुरी वृत्ति वाले मनुष्य) का गुणन्वित अन्तर तो माना है, वे जन्म या नस्ल से एक ही हैं।

3. आर्यो के धार्मिक विश्वासों को उन्होंने जो आधार दिया वह यही था कि आदिम जंगली लोग जब प्रकृति के विविध आश्चर्यकारी क्रियाकलापों सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्रमा की घटती बढ़ती कलाएं, विशाल महासागर, प्रवाहशील नदियां, हिमाच्छादित पर्वत शिखरों आदि देखते हैं तो उनका समाधान इसी में होता था कि प्रकृति के ये विविध रूप ही दैवी, पूजनीय शक्तियां (देवता) हैं। यही कारण है कि ऊषा (प्रात:) के स्वागत के गीत वेदों में गाये गये हैं।

4. इन विद्वानों ने अपनी कल्पना के बल पर ग्रीथ देवगाथा तथा वेदवर्णित देवताओं में अनावश्यक समानता ढूंढ निकाली। अब उन्हें यूनानी काव्य के नायक पैरिस तथा नायिका हेलन में वेद वर्णित सरम तथा पाणि नजर आने लगे। जूपिटर देवता मे वेद का द्यौसपितर दिखाई दिया और विद्या की देवी मिनर्वा को सरस्वती का ग्रीक संस्करण कहा जाने लगा।

भारत के उन विद्वानों पर भी यूरोपीय वेदज्ञों का प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में दिखाई दिया। उदाहरण के लिए बाल गंगाधर तिलक ने ध्रुव प्रदेश को आर्यो की आदित्य जन्मभूमि बताने का श्रम ज्योतिष् का मनमाना सहारा लेकर किया जो वैदिक विद्वत् समाज में कदापि स्वीकार नहीं हुआ। अविनाशचन्द्र दास नाम के एक बंगाली वेदज्ञ ने तिलक के मत का खण्डन किया तथा मन्त्रों के प्रमाण देकर बताया कि पंजाब का सप्तसिन्धु प्रदेश ही आर्यो का प्रथम निवास था और ऋषियों ने मन्त्रों की रचना या दर्शन इसी प्रदेश में किया था। पर दक्षिणात्य वेदज्ञ ही परमशिव अय्यर ने ऋग्वेद का अध्ययन भूगर्भ विद्या के आधार पर किया।

वेदों के अन्य पाश्चात्य विद्वानों में रोनाल्ड रॉथ, बेन्फे, वेनर (शतपथ अनुवादक), लुडविंग, ग्रॉसमेन, विल्सन, मोनीयर विलियमस,जानमूर, ग्रिफिथ, ओल्डनबर्ग, गेल्डनर तथा किमी आदि हैं। पीटर पीटरसन तथा ए.ए. मैकडानल ने वेदार्थ को जानने के लिए छात्रोपयोग मन्त्रों के अर्थ सहित संग्रह विद्यान हिटनी ने अथर्ववेद का अनुवाद किया तथा मॉरिस लूम फील्ड ने वैदिक कान्कोर्डस तैयार किया। समग्रत: पाश्चात्यों के वेदाभ्यास और वैदिक अध्ययन ने उनके विद्या व्यसंग को तो प्रकट किया किन्तु वेद विषयक अपने पूर्वाग्रहों के कारण वे वेदों का वह चरम अर्थ नहीं दिखा सके जो कालान्तर में स्वामी दयानन्द ने अपनी व्यावहारिक व्याख्या पद्धति तथा योगी अरविन्द ने अपनी आध्यात्मिक व्याख्या के द्वारा पाठकों तक पहुंचाया।

- जोधपुर (राजस्थान)

घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

यज्ञ की विधि - प्रक्रिया - एकरूपता- विशेषताएं तथा यज्ञ विज्ञान के सामान्य ज्ञान हेतु

पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

23 मई 2017 से 27 मई 2017

समय : प्रतिदिन प्रात: 7 से 8:30 बजे स्थान : एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-27

आर्यजन परिवार सहित आमन्त्रित हैं। प्रशिक्षण शिविर में न्यूनतम पति-पत्नी दोनों का सम्मिलित होना अनिवार्य है। इच्छुक परिवार शीघ्र सम्पर्क करें। यज्ञ सैट सीमित होने के कारण स्थान सीमित हैं। यज्ञ प्रशिक्षण हेतु सभी लोगों को यज्ञ कुण्ड का सैट दिया जाएगा। 10 वर्ष की आयु के बालक को भी प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध होगी। ऐसे दम्पति जिनके बच्चे छोटे हैं, के लिए क्रैच/खेलने की व्यवस्था की गई है।

अधिक जानकारी के लिए सह संयोजक श्री नीरज आर्य जी (मो.9810102856) पर सम्पर्क करें।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान; विनय आर्य, महामन्त्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सतीश चड्ढा, मुख्य संयोजक — 9540041414

ए. के. धवन, प्रधान; अरविन्द नागपाल, प्रबन्धक — एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल

नोट : कार्यक्रम में आंशिक परिवर्तन किया गया गया है अब प्रशिक्षण कार्यक्रम 5 दिन का होगा। - *संयोजक*

शुद्ध तांबे से निर्मित

वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-

वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 9540040339

आर्यसमाज वजीरपुर दिल्ली द्वारा सम्मानित किए जाने के लिए आर्यसमाज के

यशस्वी विद्वान नेता श्री धर्मपाल आर्य जी को बधाई

- मनमोहन कुमार आर्य

30 अप्रैल, 2017 को आर्यसमाज वजीरपुर, जेजे कालोनी के स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर श्री धर्मपाल जी को सपत्नीक सम्मानित किया गया है। आज कुछ समय पूर्व यह जानकारी पाकर हमें हार्दिक प्रसन्नता हुई। यह सम्मान श्री धर्मपाल जी आर्य को तो है ही, हमें लगता है कि इसका श्रेय उनके ऋषिभक्त पूज्य पिता लाला दीपचन्द आर्य जी और माता बालमति आर्या जी को भी जाता है। आर्य माता-पिता से प्राप्त संस्कारों के कारण ही श्री धर्मपाल जी आर्य की गुरुकुल झज्जर में प्रसिद्ध विद्वानों के आचार्यत्व में शिक्षा-दीक्षा हुई। इस शिक्षा के परिणाम से आप संस्कृत के विद्वान बनने के साथ ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के समस्त परम्पराओं से भी परिचित हुए। ऋषिभक्त लाला दीपचन्द जी आर्य ने ऋषि दयानन्द और आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार का अति प्रशंसनीय कार्य किया है। उनका यश अमर व अक्षुण है। आपने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली की स्थापना कर उसके माध्यम से अनेक दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का लागत से भी कम मूल्य पर भव्य एव आकर्षक आकार-प्रकार में प्रकाशन किया। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली की स्थापना वर्ष 1966 में हुई थी। आप पं. राजवीर शास्त्री न्यास की पत्रिका दयानन्द सन्देश का उत्तम सम्पादन करते हैं। उनके लेख पढ़कर पाठक उनकी ऋषि भक्ति के सम्मुख नतमस्तक हो जाते थे। आपने आर्यसमाज को नये-नये विषयों के महत्त्वपूर्ण विशेषांक देकर आर्य साहित्य को समृद्ध किया है। वैदिक मनोविज्ञान, जीवात्म ज्योति, विषय सूची, सृष्टि संवत् तथा वेदार्थ समीक्षा विशेषांक और ऐसे अनेक महत्त्वपूर्ण व शोध पूर्ण विशेषांक व ग्रन्थ आपकी लेखनी से निःसृत होकर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट से प्रकाशित हुए हैं। अब हम इनके नये संस्करणों की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब कि किसी प्रकाशक व आर्य नेताओं की इन पर दृष्टि पड़े और इनका कल्याण हो।

.....श्री धर्मपाल आर्य जी आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के यशस्वी प्रधान हैं। समय-समय पर इस प्रकाशन से आर्य जगत को अनेक नये ग्रन्थों का उपहार मिलता आ रहा है। आर्यसमाज नया बांस खारी बावरी के बिल्कुल समीप है। लाला दीपचन्द आर्य जी और श्री धर्मपाल आर्य जी इसी समाज से जुड़े हैं और इसके मुख्य अधिकारी रहते आ रहे हैं। सन् 1875 में दिल्ली में आर्यसमाज की शताब्दी मनाई गई थी। इस अवसर पर आर्यसमाज नयाबांस की ओर पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार जी का सामवेद भाष्य प्रकाशित कर बहुत अल्प मूल्य पर वितरित किया था।.....

श्री धर्मपाल आर्य जी आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के यशस्वी प्रधान हैं। समय-समय पर इस प्रकाशन से आर्य जगत को अनेक नये ग्रन्थों का उपहार मिलता आ रहा है। आर्यसमाज नया बांस खारी बावरी के बिल्कुल समीप है। लाला दीपचन्द आर्य जी और श्री धर्मपाल आर्य जी इसी समाज से जुड़े हैं और इसके मुख्य अधिकारी रहते आ रहे हैं। सन् 1875 में दिल्ली में आर्यसमाज की शताब्दी मनाई गई थी। इस अवसर पर आर्यसमाज नया बांस की ओर पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार जी का सामवेद भाष्य प्रकाशित कर बहुत अल्प मूल्य पर वितरित किया था। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली से ऋषि की आद्य जीवनी 'दयानन्द दिग्विजयार्क', यजुर्वेद भाष्य भाष्कर व यजुर्वेद भाष्य भाष्कर भाषानुवाद टीकायें, उपदेशमंजरी का विस्तृत विषय सूची सहित एक उपयोगी भव्य संस्करण, ऋग्वेद भाष्य भाष्कर टीका के कुछ भाग, मनुस्मृति व विशुद्ध मनुस्मृति के अनेक संस्करण, तीन वृहत् खण्डों में वेदार्थ कल्पद्रुम, वैदिक कोष आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है। पं. लेखराम रचित ऋषि का वृहद जीवन चरित्र आर्य साहित्य के प्रमुख ग्रन्थों में है। अब यह संस्करण सम्भवतः समाप्त हो गया है। हम आशा करते हैं कि शीघ्र ही इसके प्रकाशन की व्यवस्था भी होगी। अजमेर में आयोजित ऋषि निर्वाणोत्सव के अवसर पर दयानन्द ग्रन्थमाला का प्रकाशन सहित दीर्घकाल से सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न भव्य संस्करणों एवं ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय व दयानन्द लघु ग्रन्थ संग्रह आदि ग्रन्थों का प्रकाशन भी ट्रस्ट से हो चुका है व कुछ का अब भी हो रहा है। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका तथा संस्कार विधि के आरम्भिक प्रामाणिक संस्करणों की फोटो प्रतियां भी पुस्तक रूप में ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित की गई थी जिसका उद्देश्य मूल ग्रन्थों का संरक्षण एवं इन ग्रन्थों में पाठ परिवर्तनों को रोकना था। इन्हीं के आधार पर अब इन ग्रन्थों का प्रकाशन किया जाता है। हमें यह लिखने में भी प्रसन्नता एवं गौरव अनुभव होता है कि आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली ने सत्यार्थ प्रकाश का लगभग 13 लाख की संख्या में प्रकाशन कर पुण्य अर्जित किया है और ऋषि मिशन की प्रशंसनीय सेवा की है। यह भी बता दें कि एक ओर जहां इन ऋषि ग्रन्थों का भव्य प्रकाशन हुआ है वहीं ट्रस्ट द्वारा इनका मूल्य भी बहुत अल्प रखा गया है। इस गुण ने ही आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट ने आर्यजगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है।

अगर कोई पूछे कि आदर्श आर्य कैसे होते हैं, तो हम धर्मपाल जी की ओर संकेत करेंगे। माता-पिता के गुणों से परिपूर्ण श्री धर्मपाल आर्य जी आर्यसमाज सहित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्यसमाज के अनेक कार्यों से सक्रिय रूप से जुड़े हैं। स्मरण रहे कि जब जयपुर में महाराज मनु की प्रतिमा को उच्च न्यायालय परिसर से हटाने का आदेश हुआ था तो श्री धर्मपाल जी ने ही स्टे आर्डर लिया था और मुकदमे में बहस के लिए स्वयं ही पहुंचते थे। ऐसे अनेक कार्यों के लिए आप आर्यजगत के पूज्य हैं। हमें विश्वास है कि आप भविष्य में भी इन सभी कार्यों को जारी रखेंगे। हम समझते हैं कि आप जो सामाजिक व सार्वजनिक जीवन में कार्य कर रहे हैं उससे अच्छे कार्य और कुछ नहीं हो सकते। आप इन कार्यों को करते रहें। हम आपकी सफलता की कामना करते हैं। ईश्वर आपको स्वस्थ रखें। आपकी सार्वत्रिक उन्नति हो। आर्यसमाज वजीरपुर जेजे कालोनी में हुए सम्मान के लिए हम आपको और आपके पूरे परिवार को पुनः पुनः हार्दिक बधाई देते हैं।

- 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001 फो. 9412985121

प्रथम पृष्ठ का शेष

देख कर उस काल में ब्रिटिश राज में जब ऐसे गीत लिखने वाले को जेल में ठूस दिया जाता था, जब स्वराज्य पटल पर महत्मी गाँधी और उनके आंदोलनों का कोई नाम तक नहीं जानता था। तब लाला जी छोटी छोटी बच्चियों को देश भक्ति की घुट्टी पिलाते थे। एक और गीत इस प्रकार है-

मना तू वे मेरिया देश से प्रीति लगा
जननी भूमि जन्म की जो हैं ताको सीस नवा।
उच्च शिखर पर देश पहुंचाओ, यह व्रत हो सबका
तेज से ऐसा नाद बजाओ, सबको देओ जगा।।

पाठक स्वयं कल्पना कर सकते हैं कि लाला देवराज जी के कन्या महा विद्यालय से कितनी देश भक्त छात्राओं ने जन्म लिया होगा।

सुदूर गाँव गाँव से आई हुई छात्राओं ने देश भक्ति की अलख को कहां-कहां तक पहुँचाया होगा।

उत्तर भारत में स्वाधीनता की अलख जगाने में लाला देवराज जी का योगदान चिर स्थायी रहेगा।

साभार- विशाल भारत जुलाई-दिसम्बर 1936

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश
(उर्दू भाषा में अनुवाद)
मूल्य : 100/- रुपये
श्री बलदेव राज महाजन जी
(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)
के विशेष सहयोग से
केवल मात्र 70/- में
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. 9540040339

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001,
मो. 9540040339

भारत के सांस्कृति सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व
इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

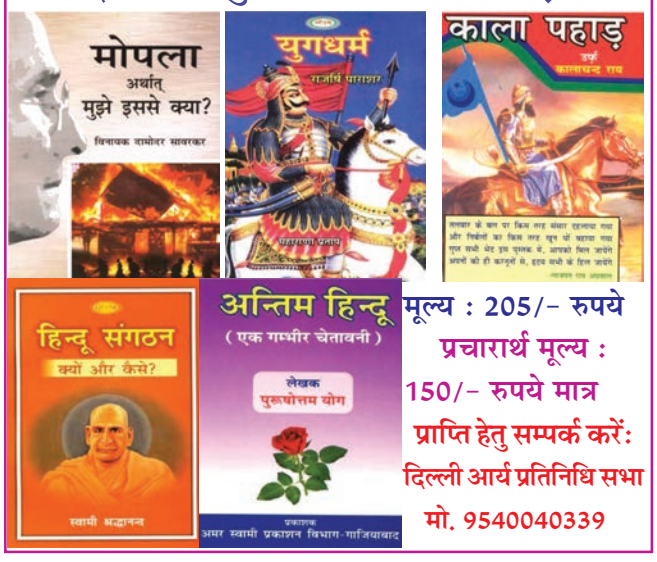

मूल्य : 205/- रुपये
प्रचारार्थ मूल्य :
150/- रुपये मात्र
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. 9540040339

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Warfare

"The daring and brilliant army chief routs the opponent army with valorous adventures. He crushes the enemy clans with terrible force. Victorious in baattles, he is pitiless and quick to take offence. A vanquiher of opponents and a matchless hero, he ever protects his army."

"Let our weapons be raised with joy. Our flags be held up (aloft) in the sky with spirits of our warriors. O killers of evils, may the speed and din of our winning chariots be kept up."

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदया वीरः शतमन्युरिन्द्रः।

दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकँ सेना अवतु प्र युत्सु।।(Yv. xvii.39)

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मनांसि।

उद् वृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्युद्रथाना जयतां यन्तु घोषाः।।(Yv. xvii.42)

Abhi gotrani sahasa gahamano dayo virah satamanyurindrah.

duscyavanah prtanasadayudhyo' smakam sena avatu pra yutsu..

Uddjarsua ,agjavammauidjamuitsatvama mamakanam manamsoi.

udvrtrahan vajinam vaginanyudrathanam jayatam yantu ghosah..

Symbols & Colours

"Fresh grass roots (as per Vedic verse) are the symbol of consecration; similarly germinated corns are the symbol of excellent possession, baked paddy of delight and honey of spiritual bliss."

"May you for your delight secure smoke coloured ones for the spring season; white ones for summer; black ones for the rains; red ones for autumn; spotted thick ones for winter and orange-coloured ones for extreme winter."

दीक्षायै रूपंशष्पाणि प्रायणीयस्य तोक्मानि।

क्रयस्य रूपं सोमस्य लाजाः सोमाँशवो मधु।।(Yv. xix.13)

धूम्रान् वसन्तायालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान् वर्षाभ्योऽरुणाञ्छरदे

पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गञ्छि शिराय।। (Yv. xxiv.11)

Diksayai rupam saspani prayaniyasya tokmani.

Krayasya rupam somasya lajah somam savo madhu..

Dhumran vasantayalabhte svetan grismaya krsnan varsabhyo' runancharade prsato hemantaya pisanganchisiraya..

Units of Time

"May the dawns be secured for you; may the days and nights be secured for you; may the half-months be secured for you; may the months be secured for you; may the seasons be sevured for upi; may the year be secured for you."

In the same verse it is further said : In a five year cycle, the first year is known as "Sambatsar", the second year as "Parivatsar", the third year as "Vatsar". In the twelfth chapter, the names of the twelve months are mentioned as Madhu, Madhava, Sukra, Sucy, Nabhas, Nabhasya, Isa, Urja, Sahas, Sahstya, Tapas and Tapasya (XXII.31). Much later, the months were named as Vaisakha, Jyestha etc. which are in vogue.

संवत्सरोऽसिपरिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि।

उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्द्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते

कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्तां संवत्सरस्ते कल्पताम्। प्रेत्याऽएत्यै सं चाञ्च प्र च सारय। सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद।। (Yv.xxvii.45).

Samvatasaro' si parivatsaro' sidavatsaro' sidvatsaro' si vatsaro' si.

usasaste kalpantamahoratraste kalpantamardhamasaste kalpantam masaste kalpantamrtavaste kalpantam samvatsaraste kalpatam.

pretya etyai sam canca pra ca saraya. suparnacidasi taya devataya ngirasvad dhruvah sida..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

पुस्तक समीक्षा

शुद्धि आन्दोलन और मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी

लेखक - श्री सन्तोष आर्य

प्राप्ति स्थान - 'संस्कृति रक्षक मंच', आर्य समाज चौक, सीताराम नगर, लातूर-413531, मो. 9922255597, 7028685442

पृष्ठ :135 **मूल्य : 80/- रुपये**

प्रस्तुत पुस्तक शुद्धि आन्दोलन से सम्बन्धित है। शुद्धि का अर्थ है कि जो पहले हिन्दू थे पर अब नहीं हैं, उन्हें फिर से हिन्दू बनाना। अगर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो यह पुस्तक लेखक का सफल प्रयास है। लेखक ने इतिहास के उन पन्नों को प्रस्तुत किया है, जिन पर सामान्यत: दृष्टि नहीं पड़ती है। शुद्धि आन्दोलन का बीज स्वामी दयान्नद ने बोया था। स्वामी दयानन्द के बाद आर्य समाज के अन्य नेताओं ने भी इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पं. लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द को इस आन्दोलन का महानायक कहा जा सकता है। इन दोनों का बलिदान भी इस बात का साक्षी है। इतिहास यद्यपि अतीत है मगर जब हम उस पर विचार करते हैं तो वह हमारा अग्रणी बनकर हमारा मार्गदर्शन करता है। इतिहास की रक्तरंजित पंक्तियां हमें यह सोचने पर विवश कर देती हैं कि हमारी वर्तमान स्थिति की नींव हमारे पूर्वजों ने किन कठिनाइयों से रखी थी।

आज के इस दौर में जहां कि ईसाइयत और इस्लाम निरन्तर धर्मान्तरण का जिम्मा बखूबी निभा रहे हैं। वहां इस देश के युवाओं को इस तरह की पुस्तकों की महती आवश्यकता है ताकि युवा अपने इतिहास से प्रेरित होकर महर्षि दयानन्द द्वारा छेड़े गये इस आन्देलन का हिस्सा बन सकें।

लेखक ने उन नामों से भी हमारा परिचय करवाया है जोकि पहले मुसलमान थे और फिर आर्य (हिन्दू) बन गये। सिर्फ आर्य ही नहीं बन गये बल्कि आर्यजगत् के बड़े विद्वानों में उनका नाम लिया जाता है। लेखक का उद्देश्य और परिश्रम दोनों ही सराहनीय है अत: वे साधुवाद के पात्र हैं। - ***सम्पादक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

क्षमाशील आदर्श सुधारक चिरंजीवलाल

ऋषि दयानन्दजी के पश्चात् जिस आर्यपुरुष ने धर्म की वेदी पर सर्वप्रथम अपने प्राण दिये, वे चिरंजीवलाल थे। उन्हें चिरंजीलाल भी कहा तथा लिखा जाता था। इन पंक्तियों के लेखक द्वारा लिखा उनका जीवन-चरित्र 'रक्तसाक्षी चिरंजीवलाल' छप चुका है। इन्होंने लुधियाना में ऋषि के दर्शन किये थे। ये पहलवान थे। सम्पन्न दुकानदार थे, परन्तु धर्म-प्रचार के जोश में अपना काम-धन्धा बन्द करके मिशनरी बन गये। थोड़े पढ़े-लिखे थे। बुद्धि तीव्र थी। गाते बहुत अच्छा थे। कविता भी उर्दू, पंजाबी, हिन्दी में रचते थे, परन्तु छन्दशास्त्र का ज्ञान न था। अनुभूति से ही लिखते थे। आप नये-से-नया भजन रचकर बाजारों में सुनाकर प्रचार किया करते। कहीं खड़े होकर व्याख्यान भी दिया करते थे। बड़े सरल गीतों में अपना भाव व्यक्त किया करते थे। एक बार मांस-भक्षण के खण्डन में लिखा-

कचौरी का तुम क्या मजा जानते हो।
फकत हड्डियाँ ही चबा जानते हो।।

सुरापान के विरुद्ध उनकी एक रचना बड़ी लोकप्रिय हुई। उसका एक पद ऐसे था-भन बोतल तोड़ प्याले नूँ।

लख लानत पीवन वाले नूँ।।

इसे सुनकर अनेक मनुष्यों ने सुरापान का त्याग किया। उन दिनों एक व्यक्ति चिरंजीवलाल के विरोध में आगे निकला। उसका नाम था बिहारीलाल चूर्णवाला। वह चूर्ण बेचते हुए सुरापान के पक्ष में चिरंजीवलाल के गीत की तर्ज पर एक गीत बोला करता था। उसके गीत की टेक थी-

आ बोतल भरदे प्याले नूँ।
की पता चिरंजी साले नूँ।।

आगे-आगे चिरंजीवलाल सुरापान के विरोध में प्रचार करता निकलता। घर बार फूँककर ऋषि का दीवाना देश-सुधार तथा परोपकार में लगा रहता। उसके पीछे-पीछे बिहारीलाल चूर्णवाला कुछ शराबियों के साथ सुरापान के गीत गाता हुआ कहता जाता-

की पता चिरंजी साले नूँ।।

चिरंजीवलाल पहलवान भी था। उसकी गर्दन भी तोड़-मरोड़ सकता था, परन्तु क्षमाशील दयानन्द का शिष्य धर्म-प्रचार में अपमानित होने में ही अपनी प्रतिष्ठा मानता था। वह बिहारीलाल की इस गाली को सुनकर भी अपने कार्य में मग्न व मस्त रहता।

इसका यह परिणाम निकला कि लोगों में बिहारीलाल के प्रति घृणा का भाव पैदा होता गया। चिरंजीवलालजी का मान बढ़ता गया। शराबियों के मन में यह भाव पैदा हुआ कि यह तो किसी का नौकर नहीं। किसी से कुछ लेता नहीं। किसलिए गाली खाता है? हमारे सुधार के लिए ही। ऐसा सोचकर कई शराबियों ने सुरापान त्यागने के व्रत लिये।

आर्यसमाज के इतिहास में और देश के सुधार-आन्दोलन के युग में धर्महित सर्वप्रथम जेल जानेवाला और कष्ट सहनेवाला प्रथम वीर यही चिरंजीवलाल था। इसकी धर्मभावना, वीरता, नम्रता तथा तड़प पर स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज भी मुग्ध थे। 'आर्यो! याद रहे न रहे पर भूल न जाना।'

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

5 से 20 जून 2017 गुरुकुल पौंधा, देहरादून

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर गुरुकुल पौन्धा देहरादून (उत्तराखण्ड) में 5 से 20 जून 2017 को स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रधान संचालक की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है। प्रवेशार्थी आर्यवीर दल या आर्य समाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, 2 फोटो एवं पहले उत्तीर्ण परीक्षा के प्रमाणपत्र की प्रतिलिपि साथ लेकर आयें। प्रवेश शुल्क 500 रु., पाठ्यपुस्तकें शिविर की ओर से प्रदान की जाएंगी। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

आचार्य धनञ्जय, शिविर संयोजक (9411106104)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

1 जून से 11 जून 2017 डी.ए.वी. स्कूल, राजेन्द्र नगर साहिबाबाद

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्मकालीन वार्षिक चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर 1 जून से 11 जून, 2017 तक डी.ए.वी. स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ.प्र.) में आयोजित किया जा रहा है। सान्निध्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं मार्गदर्शक डॉ. स्वामी देवव्रत सस्वती , प्रधान सेनापति, सार्वदेशिक आर्य वीर दल होंगे। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

बृहस्पति आर्य, महामन्त्री, 9990232164

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

21 मई से 28 मई 2017 डी.ए.वी. स्कूल, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली-92

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में वार्षिक विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर 21 मई से 28 मई, 2017 तक डी.ए.वी. स्कूल, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली-110092 में आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज आर.के. पुरम्-3
मुनीरका, नई दिल्ली-22

प्रधान - श्री भूमेश कुंमार गौड़
मंत्री - डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी
कोषाध्यक्ष - श्री राजेन्द्र सिंह रौतेला

आर्य समाज सरदारपुरा
जोधपुर (राज.)

प्रधान - श्री एल.पी. वर्मा
मंत्री - श्री मदन लाल गहलोत
कोषाध्यक्ष - श्री लक्ष्मण सिंह आर्य

गुरुकुल होशंगाबाद (म. प्र.)

प्रधान - आचार्य सत्य सिन्धु आर्य
मंत्री - श्री योगेन्द्र शास्त्री
कोषाध्यक्ष - श्री अतुल वर्मा

आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित धनश्री (असम), बामनिया (म.प्र.) तथा अन्य स्थानों पर संचालित विद्यालयों एवं गुरुकुलों के लिए प्रबन्धकों, सहायकों, एवं केयरटेकरों की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आर्यसमाजी पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी, पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha@yahoo.com पर ई मेल करें या चेयरमैन, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पते पर भेजें।

- महामन्त्री

स्वास्तियज्ञ सम्पन्न : सीनियर सिटीजन फोरम, आर्य समाज, मान सरोवर जयपुर के सदस्यों ने नवसंवत्सर के स्वागत में स्वास्ति यज्ञ आयोजित कर विश्व कल्याणार्थ विशेष आहुतियां दीं। **-ईश्वर दयाल माथुर**

घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत

पुरोहित आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना - 'घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ' के विस्तार के लिए सभा को योग्य पुरोहितों की आवश्यकता है, जो स्थान-स्थान पर जाकर दैनिक यज्ञ सम्पन्न कराए तथा उपस्थित महानुभावों को अपने प्रभावी उद्बोधन से यज्ञ कराने के लिए प्रेरित कर सके। सभी संस्कार कराने में निपुण को वरीयता दी जाएगी। गुरुकुलों से इसी वर्ष निकले ब्रह्मचारी भी आवेदन कर सकते हैं। योग्यतानुसार वेतन एवं आवास सुविधा प्रदान की जाएगी। इच्छुक ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी अपना विवरण सादे कागज पर लिखकर aryasabha@ yahoo.com पर ई मेल करें या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर पंजीकृत डाक से भेजें। आवेदन पत्र के लिफाफे पर "घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना हेतु पुरोहित के रूप में आवेदन" अवश्य लिखें। स्कूटर/मोटर साइकिल चलाना जानता हो।- ***विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441***

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

28 मई से 5 जून 2017

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मर रक्षण शिविर भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल, रिवाड़ी महाविद्यालय, गांव जसात, तहसील पटौदी, गुरुग्राम (हरियाणा) में 28 मई से 5 जून 2017 को प्रधान संचालिका साध्वी डॉ. उत्तमायति जी की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए श्रीमती अंजू बजाज, सह संचालिका (9810563979)/श्रीमती आरती खुराना (9910234595) से सम्पर्क करें। ***- मृदुला चौहान, संचालिका***

प्रान्तीय आवासीय योग-व्यायाम व चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीर दल राजस्थान का विशाल प्रान्तीय आवासीय योग-व्यायाम व चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर दिनांक 21 मई से 28 मई 2017 तक वैदिक विद्या मंदिर (आर्य कन्या विद्यालय), स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में मात्र 250 आर्यवीरों (युवकों) के लिए स्थान उपलब्ध रहेगा। अत:''पहले आओ पहले पाओ'' के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। कृपया अपना स्थान शीघ्र सुरक्षित करा लें। दिनांक 21 मई 2017 को सायं 6 बजे ध्वजारोहण के साथ शिविर का उद्घाटन एवं 28 मई को भव्य व्यायाम-प्रदर्शन, पुरस्कार वितरण एवं आर्य विद्वानों, नेताओं के उद्बोधन के साथ शिविर का दीक्षांत समारोह सम्पन्न होगा।

-जगदीश प्रसाद गुप्ता (प्रधान) शिविराध्यक्ष

गुरुकुल होशंगाबाद का 106वां स्थापना दिवस सम्पन्न

गुरुकुल होशंगाबाद का 106वां स्थापना दिवस 27 अप्रैल 2017 को सम्पन्न हुआ। समारोह में स्थानीय व्यक्तियों के अतिरिक्त अनेक प्रान्तों से जनप्रतिनिधि उपस्थित हुए। यज्ञोपरान्त गुरुकुल के 105 वर्ष के इतिहास व वर्तमान प्रगति पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने की। समारोह में पुलिस अधीक्षक होशंगाबाद सर्वश्री आशुतोष प्रताप सिंह, लक्ष्मीनारायण भार्गव, जय नारायण आर्य, अतुल वर्मा एवं स्वामी ऋतस्पतिजी, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, श्री योगेन्द्र याज्ञिक आदि उपस्थित हुए और गुरुकुल स्थापना के सम्बन्ध में उद्बोधन किया। इस अवसर पर गुरुकुल का त्रैवार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन भी सम्पन्न हुआ। - ***मंत्री जी***

आर्य समाज हल्द्वानी ने मनाया 126वां वार्षिकोत्सव

'सनातन वैदिक धर्म परमात्मा की ओर से स्थापित धर्म है। सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा ने मानव कल्याण, सृष्टि संचालन के नियमों के लिए वेदों का ज्ञान दिया।' आर्य समाज मंदिर के 126वें वार्षिकोत्सव पर उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार ने यह बात कही। रोडवेज स्टेशन स्थित आर्य समाज मंदिर में आयोजित समारोह में आर.एस.एस के प्रान्त प्रचारक युद्धवीर ने कहा स्वामी दयानन्द सरस्वती ने छुआछूत, बाल विवाह, सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं को मिटाने के साथ वेदों की ओर लौटने का नारा देकर समाज को जागृत किया। बिजनौर के भीष्म आर्य ने भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में गुरुद्वारा सिंह सभा अध्यक्ष अमरजीत सिंह सेठी, सुरेन्द्र भुटियानी, डॉ. डी एस खाती, हरीश पाण्डेय, आर्य समाज की प्रधान कांता विनायक, बसंत कुमार, हजारीलाल अग्रवाल, डॉ. विनय खुल्लर आदि ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। ***- मन्त्री***

शोक समाचार

श्रीमती शान्ति शर्मा को पुत्रशोक

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन से जुड़ी माता शान्ति शर्मा जी के सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा जी 21 अप्रैल को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन निगम बोध घाट पर किया गया।

डॉ. रमेश गुप्ता को पितृशोक

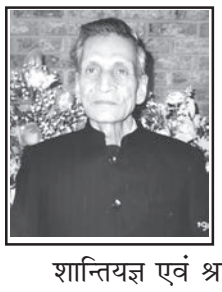

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व प्रधान डॉ. रमेश गुप्ता जी के पूज्य पिता श्री मदन लाल मंगल जी के दिनांक 29 अप्रैल, 2017 को 95 वर्ष आयु में उनके पैतृक निवास छबड़ा, जिला- बारां (राजस्थान) में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया।

शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 1 मई को सम्पन्न हुई जिसमें दिल्ली सभा के महामन्त्री एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने पहुंचकर आर्यसमाज की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।-सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 1 मई, 2017 से रविवार 7 मई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 4/5 मई, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 मई, 2017

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

18वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **18वां परिचय सम्मेलन** का आयोजन 9 जुलाई, 2017 को आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नई दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

आर्यजन अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तिथि से 15 दिन पूर्व अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिए, जिससे प्रत्याशी का विवरण पंजीयन पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन भरकर पंजीकरण** भी कराए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक **(मो. 9414187428)**

एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली **(मो. 9540040324)**

जहांगीरपुरी में आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि क्रय एवं लघु भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि दिल्ली के जहांगीर पुरी क्षेत्र में आर्यसमाज मन्दिर के भवन निर्माण के लिए भूमि क्रय कर ली गई है, जिसके मूल्य भुगतान के लिए 90 दिन का समय लिया गया है। भुगतान की अन्तिम तिथि 24 जुलाई, 2017 निर्धारित की गई है।

विदित हो कि दिल्ली के झुग्गी-झोपड़ी कालोनी - जहांगीरपुर में आर्यसमाज की गतिविधियां विगत 40 वर्षों से संचालित की जा रही थीं किन्तु मन्दिर निर्माण के लिए भूमि खरीदी नहीं जा सकी थी। अब आर्यसमाज एवं सभा के सहयोग से भूमि खरीद ली गई है और इस पर लघु मन्दिर निर्माण कार्य आरम्भ किया जाना है।

इस हेतु समस्त आर्यसमाजों, दानी महानुभावों, सहयोग संस्थानों, संगठनों से सहयोग सादर अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक धनराशि का सहयोग नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम बनवाकर सभा कार्यालय - **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप चाहें तो अपनी दानराशि सीधे सभा के निम्नलिखित बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

कृपया राशि जमा करते ही श्री मनोज नेगी जी 9540040388 को सूचित करें तथा अपनी जमा पर्ची को सभा की ईमेल आईडी aryasabha@yahoo.com पर ईमेल कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

भारतीय स्टेट बैंक

खाता सं. 33723192049

IFSC : SBIN0001639

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य प्रधान

विनय आर्य महामन्त्री

प्रतिष्ठा में,

गुरुकुल पौंधा में नि:शुल्क योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 मई से 4 जून 2017 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** का स्वाध्याय कराया जाएगा। अपनी पुस्तक साथ लेकर जाएं अन्यथा वहां से खरीदनी पड़ेगी। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा आना-जाना लगभग 700/- व लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 28 मई 2017 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 4 जून 2017 को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सुखबीर सिंह, शिविर संयोजक,

मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मो. 09350502175, 09540012175

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह